प्रा. डॉ. वाय्. बी. घुमाळ,
एम्. ए. पीएच्. डी.
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड.

- प्र मा ण प त्र -

यह प्रमाणित किया जाता है कि **श्री हणमंतराव आनंदराव यादव** ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए **"हिन्दी उपन्यासों में चित्रित झोपडपट्टी जनजीवन का चित्रण"** (पाँच उपन्यासों के संदर्भ में) शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। श्री हणमंतराव आनंदराव यादव के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कराड

दिनांक : 29 · 12 · 95

डॉ. वाय्. बी. घुमाळ
शोध-निर्देशक

परीक्षणार्थ अग्रेषित

30/12/95

हिन्दी विभाग

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

- प्रमाणपत्र -

हम संस्तुति करते हैं कि इस लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

प्रा. पुरुषोत्तम शेठ
प्राचार्य,
लालबहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा.

प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा
सातारा

डॉ. गजानन सुर्वे
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज,
सातारा.

दिनांक : 29/12/1995

०००

- प्र ख्या प न -

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

तळमावले

दिनांक : 29/12/1995

श्री हणमंतराव आनंदराव यादव

000

- विषयानुक्रमणिका -

1. प्राक्कथन 1 - 7

2. अध्याय प्रथम : 8 - 39

"झोपडपटटी : स्थिति और गति"

1) झोपडपट्टी की संकल्पना

2) झोपडपट्टी एक जागतिक समस्या

3) भारत में स्थित झोपडपट्टियों की स्थिति

4) बम्बई महानगर की झोपडपट्टियों की स्थिति और गति

5) महानगरीय जनजीवन की समस्याओं का झोपडपट्टी निर्मिती में योगदान

6) नागरीकरण के कारण -

अ) औद्योगिक कारण

ब) यातायात और संचार के माध्यम

क) आर्थिक कारण

ड) राजनीतिक कारण

इ) सांस्कृतिक कारण

7) नगर-महानगर-विशालनगर : विकासयात्रा

8) नगरों का वर्गीकरण

9) मानवी जीवन और महानगरों का आकर्षण

10) बम्बई में स्थित धारावी झोपडपट्टी में परिवर्तन की हवा

11) चुनावी राजनीति में झुग्गी-झोपडियों का योगदान

12) बम्बई महानगर और झोपडपट्टी निर्मूलन अभियान

13) महानगरीय जनजीवन की समस्याएँ : एक अवलोकन

3. अध्याय द्वितीय : 40 - 83

"हिन्दी के झोपडपटटी पर आधारित उपन्यासों में चित्रित जनजीवन का चित्रण"

गंदगीपूर्ण परिवेश

विस्थापन

वेश्या-व्यवसाय

दारिद्रय

अवैध धन्धें

दाम्पत्य जीवन में तनाव

मानवता

उज्ज्वल भविष्य के सपने

गाली-गलौज की प्रवृत्ति

असाध्य बिमारियाँ

पुलिस आतंक

आपसी ईर्षा-द्वेष

भविष्यत के प्रति चिंतन

नशापान

जातीय भेदाभेद

वेश्यागमन की प्रवृत्ति

मनोरंजन की विविध प्रणालियाँ

अवैध सम्बन्ध

दुर्दैव के शिकार लोग

स्नेहील प्रेमसंबंध

निष्कर्ष :

3. अध्याय तृतीय : 84 - 123

"झोपडपटटी जनजीवन की समस्याएं"

1) वेश्या समस्या

2) पुलिस शोषण की समस्या

3) विस्थापन की समस्या

4) अवैध धन्धों की समस्या

5) अवैध सन्तान की समस्या

6) नशापान की समस्या

7) असाध्य बिमारियों की समस्या

8) बेकारी की समस्या

9) दारिद्रता तथा अभावग्रस्तता की समस्या

10) अवैध यौन सम्बन्धों की समस्या

निष्कर्ष

5. अध्याय चतुर्थ : 124 - 177

"हिन्दी के झोपडपटटी पर आधारित उपन्यासों का संक्षिप्त में आशय"

1) शैलेश मटियानी - "कबूतरखाना" - 1960

2) शैलेश मटियानी - "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई" - 1960

3) शैलेश मटियानी - "बोरीवली से बोरीबंदर तक" - 1969

4) जगदम्बाप्रसाद दीक्षित - "मुरदाघर" - 1974

5) भीष्म साहनी - "बसंती" - 1980

6. अध्याय पंचम : 178 - 192

"मराठी के झोपडपटटी जनजीवन पर आधारित उपन्यास - एक अवलोकन"

1) जयवंत दळवी - "चक्र" - 1960

2) भाऊ पाध्ये - "वासूनाका" - 1965

3) मधुमंगेश कर्णिक - "माहिमची खाडी" - 1969

4) ल.ना. केरकर - "तो आणि त्याचा मुलगा" - 1980

7. अध्याय षष्ठ : 193 - 199

"उपसंहार"

8. संदर्भ ग्रंथ सूची : 200 - 202

000

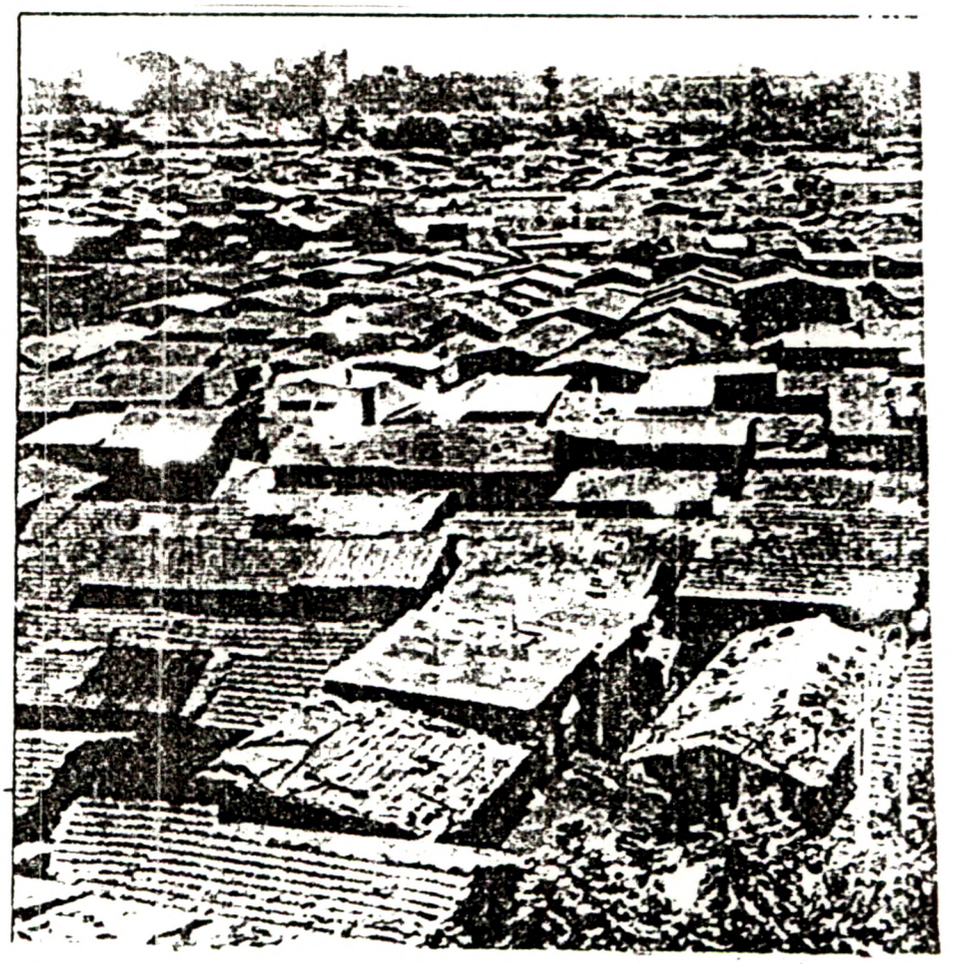

धारावी झोपडपट्टी

- प्राक्कथन -

साठोत्तरी उपन्यास साहित्य अपनी अलग पहचान, विशेषता और अपनी महत्ता लिए पाठकों के सामने प्रस्तुत होता है। साठोत्तरी उपन्यास लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अस्पर्शित, अनछुए भूभागों को तलाशने का प्रयत्न शुरू किया। सन् 1960 के बाद समाज में बढनेवाली मूल्यहीनता, स्वार्थांधता, सत्ता लोलुपता, भ्रष्टाचार की भयावहता, अनुशासन विहीनता, वर्गसंघर्ष आदि ने भारतीय जनमानस को क्षत-विक्षत कर डाला था। सन् 1960 के पश्चात् इस प्रतिकूल परिस्थिति में मध्यवर्गीय बुध्दिजिवी लेखकों की नई पीढी का आगमन हिन्दी उपन्यास साहित्य में हुआ। उन्होंने समस्त भारतीय समाज में फैला निराशा का अंधःकार देखा, मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय समाज की विवशताओं को देखा, इनकी बेबसियों और कठिनाइयों को देखा, परखा और अनुभव भी किया। निम्नवर्ग अथक परिश्रम के बावजूद भी लाचारी की ओट में पलता हुआ इन नयी पीढी के लेखकों ने देखा। सरकारी निरंकुश शासन पर जनता का विश्वास कम होने लगा। आत्मकेन्द्रित व्यक्ति सामाजिक एवं राष्ट्रीय दायित्व को भूलता हुआ देखने को मिला। बढती आबादी, बढती बेरोजगारी और बढती बकाल बस्ती में देश के महानगरों में एक संकटमय स्थिति का निर्माण कर दिया। नशापान, भ्रष्ट पुलिस माहौल और बढती हुई महँगाई से देश में अराजकता फैल गयी। सन 1960 के बाद हिन्दी उपन्यासों में विद्रोह तथा मोह भंग का एक विकट दौर शुरू हुआ।

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासकारों की नयी पीढी भी अपने युग की समस्त चेतना एवं संवेदना को अपने उपन्यासों में विकसित करना शुरू किया। इन्होंने औपन्यासिक क्षेत्र में विविध प्रयोग किये। व्यक्तित्व बोध, युगबोध, भावबोध को वाणी मिली। अनुभूति और संवेदना का सुंदर संमेश्रण उपन्यास साहित्य में उभरने लगा। टकराव, विद्रोह, अनास्था, मूल्यविहीनता और प्रसंगानुकूल भाषाशैली को बढावा मिला। कथानक को नदारत करके चारेत्रों के प्रभाव को कम करके अस्पार्शित परिवेश को प्राधान्य दिया गया। ग्रामांचल, पहाडी अंचल, नदी अंचल, सागर अंचल, झुग्गी-झोपडी अंचल आदि अस्पार्शित परिवेश को इन उपन्यासकारों ने वाणी प्रदान करा दी है। अंचल को नायक बनाकर वही अंचल अपनी कथा और व्यथा पात्रों के माध्यम से विषद करने लगा। इन उपन्यासकारों ने परम्परागत साहित्यिक मान्यताओं, जीवनगत समस्याओं आदि के साथ जुडा न रहकर इससे भी आगे बढकर समाज-जीवन का यथार्थ चित्रण करने पर जोर दिया और साहित्य में समाज जीवन का हू-ब-हू चित्रण होने लगा। सन् 1960 के बाद सुराजित उपन्यासों में व्यक्ति,

समाज, देश तथा परिवेश के आगे भोगे हुए और अनुभव किये हुए क्षणों की तीव्र अभिव्यक्ति होने लगी। इन उपन्यासों में विशिष्ट वैचारिक वाद-विशेष पर बल नहीं दिया गया। सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और अंचलिक साहित्य का सृजन होने लगा। इस कालखण्ड में भावुकता को कम प्रश्रय मिला परंतु तर्क-वितर्क को अधिक बढ़ावा मिला। इस कालखण्ड के उपन्यास साहित्य में समाज जीवन के विविध पहलुओं में सूक्ष्मता और बारिकियाँ देखने को मिलती है।

इस कालखण्ड में लिखे गये सैकडों उपन्यास अपनी किसी-न-किसी विशेषता के कारण उल्लेखनिय बन बैठे हैं। "कबूतरखाना", "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई", "बोरीवली से बोरीबंदर तक", "मुरदाघर" और "बसंती" ऐसे उपन्यास ये विशेष उल्लेखनीय माने जाते हे जिनमें महानगरीय उच्छिष्ट पर पली हुई झुग्गी-झोपडी की घिनौनी, घृणित जिंदगी को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। इस अस्पर्शित, घिनौनी नरकपुरा में कदम रखकर इन लेखकों ने जो ढाढस दिखाया है, प्रशंसनीय है। इन उपन्यासों में न किसी नारे-बाजी और न किसी पैतरेंबाजी की गुंजाइश है। इन उपन्यास के उपन्यासकारों पर न पूर्ण रूप से मार्क्सवाद का, न फ्रायड का, न एडलर का, न युग का प्रभाव है। ये उपन्यासकार अर्थ और काम के आधार पर सामाजिक यथार्थवादी उपन्यासों की रचनाएँ लिख रहे है। इन पर अति यथार्थवाद, प्रकृतवाद, अस्तित्ववाद, समाजवाद आदि के लेबाल पूर्णतः वेष्टित नहीं किये जा सकते। इन उपन्यासों में नवीन संचेतना के विविध मुख्य रूप प्रस्फुटित हुए है ऐसा लगता है। इन उपन्यास के उपन्यासकारों ने झुग्गी-बस्तियों में घटनेवाली भयावह तथा भीषण घटनाओं का प्रस्तुतिकरण करके भारतीय जनजीवन को एक नयी करवट देने का प्रयत्न किया है। मानवी जीवन को तिलमिला देनेवाली नये प्रश्नों का समाधान ढूँढने का स्तुत्य प्रयत्न इन प्रबुध्द उपन्यास लेखकों ने किया है। इन उपन्यासों में झोपडपट्टी जनजीवन के बहु आयामी परिप्रेक्षकों को साकार करने का प्रयत्न किया है और झुग्गी-बस्ती के जनजीवन के सामने पनपनेवाली विविध समस्याओं को पाठकों के सामने साहस के साथ प्रस्तुत किया है।

झोपडपट्टी की निर्मिती महानगर की सबसे बडी बिमारी है। भारत ने 19 वी सदी के अंत में औद्योगिकरण का दौर-दौरा शुरू हुआ। महानगरों में विविध प्रकार के कल-कारखाने खोले गये। इन कारखानों में काम करने के लिए उदरपूर्ति की तलाश में ग्रामीण सर्वहारा लोग शहरों की तरफ दौड पडे। शहरों और महानगरों में बाहरी लोगों की भीड बढने लगी। नियोजनविहीन महानगरों में मिलनेवाली खाली जगहों पर बिना परवाना टाट बिछाकर झोपडपट्टियों का निर्माण हुआ। शहरों और महानगरों की खाली जगहें समाप्त होने पर रेल-लाईन की ढलान पर बस्तियाँ बनायें जाने लगी। गंदी वैतर्णियों के किनारे झुग्गी-झोपडियाँ बसायी गयी। अतीव दरिद्रता और खुली

हवा की कमी के कारण झोपडपट्टियाँ असाध्य रोगों की अड्डे बनी। जगह की तंगी के कारण स्त्री-पुरूषों के खुले शरीर-सम्बन्ध बच्चों की आँखों से नही बच सकें। इसका दुष्परिणाम इन बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पडे बिना नहीं रहा। झोपडपट्टियाँ बुरे व्यवसायों के अड्डे बनी। वेश्या-व्यवसाय, तस्करी, हातभट्टी, चोर-बजारी, गुनहगारी, पाकिटमारी आदि अवैध धन्धें इस बस्ती में पनपने लगे। अनैतिक सम्बन्ध, अवैध सम्बन्ध, अवैध मातृत्व और अवैध सन्तान की जडें वहाँ जमने लगी। कानून तोडना, रिश्वतें देना, गुण्डई करना आदि प्रवृत्तियाँ प्रबल होने लगी। झोपडपट्टी के गुण्डा लोगों को अपना हाथियाँ बनाकर नेता लोग और पूँजीपति लोग अपना उल्लू सीधा करने लगें। बम्बई में स्थित धारावी एशिया खण्ड की सबसे बडी झोपडपट्टी मानी जाती है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के आलोच्य उपन्यासों में बम्बई में स्थित रेल-लाईन की ढलान पर बसी, मुंबरापाडा, कोली-बाडा, शिवडी, कल्याण के साईड में भीमडी रोड, जोगेश्वरी आदि के साथ-साथ दिल्ली महानगर में बसी हुई झुग्गी-झोपडपट्टियों को केंद्र में रखकर वहाँ के जनजीवन को चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है। इन जनजीवन में चित्रित वेश्या, पुलिस-शोषण, विस्थापन, अवैध धन्धें, अवैध संतान, नशापान, असाध्य रोग, बेकारी, दारिद्रता, अवैध यौन सम्बन्ध आदि समस्याओं के माध्यम से इन जनजीवन की स्थिति और दुर्गति को चित्रित करने का प्रयत्न किया है।

हिन्दी के आलोच्य उपन्यासकारों ने झोपडपट्टी जनजीवन का चित्रण अपने उपन्यासों के माध्यम से करके अनगोडी, अनछुयी जमीन को खोदने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। महानगरों में बसी इसी नारकीय जिंदगी की यथार्थता के धरातल पर चित्रण करके इन लेखकों ने हिन्दी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में एक नया प्रयोग किया है। इन उपन्यासों में अधिक मात्रा में रेल-लाइन की ढलान पर गटार-गंगा के किनारे बसी हुई रंडियों के जीवन का यथार्थ लोगों के सामने इन लेखकों ने प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों में झोपडपट्टी जनजीवन के भयावह रंग, असह्य बंदगी, देह-विक्रय करनेवाली औरतें, जीवन की भयावह पीडा, भुखमरी, दारिद्रय, रोगग्रस्तता, अभावग्रस्तता, लाचारी, दुःखों एवं यातनाओं को बर्दाश्त करने की मजबुरी, कुली, मजदूर, मामुली पेशेवाले, मनचले, आवारा छोकरें, टैक्सीवाले, हीजडे आदि की एक विशिष्ट दुनिया पाठकों के सामने रखी है।

इस बस्ती में गुनहगार, तडीपार किये हुए अपराधी लोग है। पुलिस की कचोट में फँसकर रौंदाये गये इन्सान भी है। इनमें से कई लोग इन्सानियत से ओतप्रोत दिखाई देते है। उज्ज्वल भविष्यत के सपने और सभ्य प्रतिष्ठित जिंदगी जीने की लालसा रखनेवाले दरिद्री लोग भी मिलते है। ये लोग पेट की अग्नि को बुझाने के लिए रात्री के अंधियारे में चोरियाँ भी करते है। इस माहौल में सामाजिक रूग्णता और स्नेहील प्रेमसम्बन्ध भी देखने को मिलते है। यहाँ मजबुरियाँ है, देह-विक्रय करनेवाली औरतें है, निकम्मे पति से संघर्ष करनेवाली औरतें है, ग्राहकों के प्राप्ति

के लिए आपसी संघर्ष करनेवाली वारांगनाएँ इन सभी को आतंकित करनेवाली पुलिस है, मानवीय प्रेमसम्बन्धों के रखवाले पात्र भी है, धोखा खाकर बस्ती में आयी युवतियाँ भी है, अपने पेटों की रोटी के लिए तडपनेवाली औरतें है, एक-दूसरे की पीडा से पीडित लोग है, इन झुग्गी-बस्तियों में रहनेवाले ये सारे लोग एक भयावह अभिशाप ढोते रहते है। उनके जनजीवन के विविध पहलुओं पर आलोच्य हिन्दी उपन्यासकारों ने प्रकाश डाला है।

हवालात में जीवनयापन करनेवाले यहाँ के लोग है, पुलिसों के साथ टकरानेवाले युवक है, जूठन पर टूट पडनेवाले बच्चे है, बाँझ और निष्फल सपने संजोनेवाले युवक है, अवैध संतान को जन्म देनेवाली अभिशप्त रांडेयाँ है, इन सभी की जिंदगी महानगरीय उच्छिष्ट पर पलती है। आलोच्य उपन्यास लेखकों ने झोपडपट्टी जनजीवन की विविध शक्लों से पाठकों को परिचित कराकर झोपडपट्टी जनजीवन के सुधार हेतु कई प्रस्तावों की ओर भी संकेत किया है। इन झोपडपट्टियों में समाजसेवी संस्था तथा सरकार के द्वारा विकास-कार्य जारी किया जाय तो इन लोगों की स्थिति में परिवर्तन होने में देरी नहीं होगी। आज बम्बई में झोपडपट्टी निर्मूलन करके झोपडपट्टी जनवासियों को पक्के मकानों की उपलब्धि करा देने का प्रयत्न सरकार कर रही है। सरकारी प्रयत्नों से झोपडपट्टियों का निर्मूलन जरूर होगा परंतु पक्के मकानों में रहनेवाले झोपडपट्टियों के लोगों की प्रवृत्तियों में परिवर्तन होगा ही इसकी संभावना कम लगती है।

ये सारे उपन्यासकार झोपडपट्टी जनजीवन के पक्षधर बनकर इन लोगों की दुर्गति को लोगों के सामने रखकर इनके जनजीवन में परिवर्तन करने की धुन में दिखाई देते है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को हमने छः अध्यायों में विभाजित किया है -

अध्याय प्रथम : "झोपडपट्टि : स्थिति और गति" - में हमने झोपडपट्टी की संकल्पना, झोपडपट्टी एक जागतिक समस्या, भारत में स्थित झोपडपट्टियों की स्थिति, बम्बई महानगर की झोपडपट्टियों की स्थिति और गति, महानगरीय जीवन की समस्याओं का झोपडपट्टी निर्मिती में योगदान, नागरीकरण के कारण, नगर-महानगर-विशालनगर विकासयात्रा, नगरों का वर्गीकरण, मानवी जीवन और महानगरों का आकर्षण, बम्बई में स्थित धारावी झोपडपट्टी में परिवर्तन की हवा, चुनावी राजनीति में झुग्गी-झोपडियों का योगदान, बम्बई महानगर और झोपडपट्टी निर्मूलन अभियान, महानगरीय जनजीवन की समस्याएँ : एक अवलोकन आदि के माध्यम से झोपडपट्टी की स्थिति और गति पर प्रकाश डालने का काम किया है और महानगरीय जनजीवन में औद्योगिक विकास ने झुग्गी-झोपडियों के निर्मिती में महत्वपूर्ण योगदान निभाया है, इसे स्पष्ट किया है।

अध्याय द्वितीय : "हिन्दी के झोपडपट्टी पर आधारित उपन्यासों में चित्रित जनजीवन का चित्रण" में हमने गंदगीपूर्ण परिवेश, विस्थापन, वेश्या-व्यवसाय, दारिद्रय, अवैध धन्धें, अवैध सम्बन्ध, दाम्पत्य जीवन, मानवता, उज्जवल भविष्य के सपने, गाली-गलौज की प्रवृत्ति, असाध्य बिमारियां, पुलिस आतंक, आपसी द्वेष और संघर्ष, भविष्य के प्रति चिंतन, नशापान, जातीय भेदाभेद, वेश्या गमन की प्रवृत्ति, मनोरंजन की विविध प्रणालियाँ, अवैध सम्बन्ध, दुर्दैव के शिकार लोग और स्नेहील प्रेमसम्बन्ध आदि जनजीवन के विविध पहलूओं को प्रस्तुत करते हुए झोपडपट्टी जनजीवन पर प्रकाश डाला है और झोपडपट्टी जनजीवन का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

अध्याय तृतीय : "झोपडपट्टी जनजीवन की समस्याएँ" में हमने वेश्या-समस्या, पुलिस शोषण की समस्या, विस्थापन की समस्या, अवैध धन्धों की समस्या, नशापान की समस्या, असाध्य बिमारियों की समस्या, बेकारी की समस्या, दरिद्रता तथा अभावग्रस्तता की समस्या, अवैध यौन सम्बन्धों की समस्या आदि समस्याओं पर चिंतन करके झोपडपट्टी जनजीवन को त्रस्त करनेवाली इन समस्याओं का हल ढूँढने का प्रयत्न भी किया है।

अध्याय चतुर्थ : "हिन्दी के झोपडपट्टी जनजीवन पर आधारित उपन्यासों का संक्षिप्त में आशय" में हमने "कबूतरखाना"- 1960, "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई"- 1960, "बोरीवली से बोरीबंदर तक" 1969, "मुरदाघर" - 1974 और "बसंती" - 1980 आदि उपन्यासों के संक्षिप्त आशय को प्रस्तुत करके झोपडपट्टी जनजीवन की झाँकिया प्रस्तुत की गयी है।

अध्याय पंचम : "मराठी के झोपडपट्टी पर आधारित उपन्यास : एक अवलोकन" में हमने जयवंत दलवी के "चक्र" - 1963, भाऊ पाध्ये के "वासूनाका" - 1965, मधु मंगेश कर्णिक के "माहीमची खाडी" - 1969, ल.ना. केरकर के "तो आणि त्याचा मुलगा" - 1980 आदि प्रमुख मराठी के झोपडपट्टी पर आधारित उपन्यासों का जिक्र प्रस्तुत करते हुए यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि मराठी में झोपडपट्टी जनजीवन पर आधारित स्वतंत्र साहित्य धारा है। हिन्दी में मात्र यह स्वतंत्र धारा न होने पर भी "मुरदाघर" जैसे उपन्यास में मराठी के झोपडपट्टी उपन्यासों से भी कमाल का यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

अध्याय षष्ठ : "उपसंहार" में हमने इस लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया है और साथ ही साथ झोपडपट्टी जनजीवन के सुधार के लिए कई उपाय सुझाने के प्रयत्न भी किये गये है।

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के हिन्दी विभाग के रीडर एवं विभागाध्यक्ष प्रा. डॉ. वाय.बी. धुमाळजी के पांडित्यपूर्ण निर्देशन में शोध-कार्य करने का अवसर मिला। उनके उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का ही यह शुभ परिणाम है कि

एकनिष्ठ भाव से शोध-कार्य में संलग्न रहने की धैर्यशक्ति मैं पा सका और अंततः कार्य को संपन्न कर सका। श्रध्देय गुरुवर डॉ. वाय.बी. धुमाळजी ने मुझे अपने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा विषय के सैध्दांतिक और ओपडपट्टी जनजीवन के अध्ययन में मुझे उत्साह एवं प्रेरणा दी। उनके शांत, गंभीर व्यक्तित्व तथा उदार भाव से युक्त ज्ञान के फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका है। उनके प्रति यह शाब्दिक आभार मेरे हृदय से स्थित कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ है।

लालबहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा के प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ तथा हिन्दी विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष डॉ. गजानन सूर्वे, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. पी.एस. पाटील तथा डॉ. अर्जुन चव्हाण का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय - समय पर निर्देश देकर मेरे शोध-कार्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में मुझे सौ. नयना धुमाळजी की भी विशेष सहायता मिली, जिन्होंने मुझे इस कार्य के हेतु बार-बार प्रोत्साहित किया। मेरे परम मित्र श्री सुरेश यादव ने भी इस कार्य में मदद कर अपनी उदारता एवं उदात्तता का परिचय दिया। उनके प्राते भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के महत्वपूर्ण कार्य में मेरे पूज्य पिताजी श्री आनंदराव यादव तथा आदरणीय ममतामयी माँ सौ. गीताई की उत्सफूर्त प्रेरणा मिली। जिन्होंने अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मुझे बार-बार प्रोत्साहित कर इस कार्य को पूर्ण करने में मदद की। उनके प्रति मैं हृदय से श्रध्दाविनीत हूँ।

कु. संगीता घराळ तथा उनके परिवार का मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस शोध-कार्य में सहायता कर अपनी उदारता का परिचय दिया, उनके प्रति आभार मानना मेरा परम कर्तव्य है।

"मुरदाघर" के लेखक जगदम्बाप्रसाद दीक्षित और ओपडपट्टी साहित्य के विशेष ज्ञाता डॉ. शुभ्रकार कपूर (तलरेजा कॉलेज, उल्हासनगर, बम्बई।) ने प्रत्राचार और प्रत्यक्ष मुलाकात के द्वारा महत्वपूर्ण निर्देश दिये इसलिए मैं इन दोनों का हृदय से आभारी हूँ।

वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा के ग्रंथपाल तथा अन्य कर्मचारी, काकासाहेब चव्हाण महाविद्यालय, तळमावले के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी, संत गाडगे महाराज कॉलेज, कराड के ग्रंथपाल एवं अन्य कर्मचारी आदि का मैं विशेष ऋणी रहूँगा, जिन्होंने पुस्तके जुटाने में अत्यंत तत्परता के साथ मेरी सहायता की।

इस प्रबंध के टंकन का अत्यंत महत्वपूर्ण काम ज्योति इलेक्ट्रॉनिक्स, कराड की प्रबंधक सुश्री ज्योति नंदिडकरजी ने किया, उनके सहकार्य के लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

तळमावले :
दिनांक : 29/12/1995

विनीत,

000